

❖ ऋग्वेद में मण्डल, ऋषि और सूक्तसंख्या ।

शतार्चिनो गृत्समदः विश्ववामात्रिपञ्चकम् । भरद्वाजो वशिष्ठश्च कण्वस्मोमो भृगुर्दश ॥
नवोनद्विशतं चैव त्रिचत्वारिंशदप्यथ । द्विषष्टिश्चाष्टपञ्चाशत्सप्ताशीतिर्यथाक्रमम् ॥
स्यात्पञ्चसप्ततिश्चत्वारिंशुत्तरशतं ततः । चतुर्दशोत्तरशतं नवोनद्विशतं क्रमात् ॥

मण्डलम्	ऋषिः	सूक्तानि	मण्डलम्	ऋषिः	सूक्तानि
१	शतार्चिन	१९१	६	भरद्वाजः	७५
२	गृत्समदः	४३	७	वशिष्ठः	१०४
३	विश्वामित्रः	६२	८	कण्वः	१०३
४	वामदेवः	५८	९	सोमः	११४
५	अत्रिः	८७	१०	भृगुः	१९१

❖ देवताओं के स्थान।

रुद्रेन्द्रावन्तरिक्षस्थावग्निस्सोमो गुरुर्भुवि । दिव्युषा सविता विष्णुर्वरुणश्च तथाश्विनौ ।

अन्तरिक्षस्थानीय	रुद्र, इन्द्र और वायु
पृथ्वीस्थानीय	अग्नि, सोम और बृहस्पति
द्युस्थानीय	उषा, सविता, विष्णु, वरुण और अश्विनौ

सूक्तों के ऋषि, देवता, छन्द, तथा मंत्रों का संक्षिप्त विवरण-

सूक्त	ऋषि	देवता	छंद	मंत्र
(1) अग्नि 1.1	मधुच्छन्दा	अग्नि	गायत्री	9
(2) इन्द्र 2.12	गुत्समद	इन्द्र	त्रिष्टुप	15
(3) पुरुष 10.90	नारायण	त्रिष्टुप+अनुष्टुप	त्रिष्टुप+अनुष्टुप	16
(4) हिरण्यगर्भ 10.121	हिरण्यगर्भ	प्रजापति	त्रिष्टुप	10
(5) नासदीय 10.129	परमेष्ठी, प्रजापति	परमात्मा	त्रिष्टुप	7
(6) वाक् 10.125	वाक् आम्भृणी	वागाम्भृणी	जगती, त्रिष्टुप	8
(7) सूर्य 11.125	कुत्स	सूर्य	त्रिष्टुप	6
(8) उषस् 3.61	विश्वामित्र	उषा	त्रिष्टुप	7
(9) पर्जन्य 5.83	अत्रि	पर्जन्य	त्रिष्टुप, जगती, अनुष्टुप	10
(10) शिवसङ्कल्प 1.6	याज्ञवल्क्य	मनोदेवता	त्रिष्टुप	6
(11) प्रजापति 1.5	हिरण्यगर्भ	प्रजापति	त्रिष्टुप	5
(12) काल 10.53	भृगु	काल	त्रिष्टुप, बृहती, अनुष्टुप	10
(13) पृथ्वी 12.1	अथर्वा	भूमि	त्रिष्टुप, जगती	63
(14) वरुण 1.25	शुनः शेष	वरुण	गायत्री	21
(15) राष्ट्राभिवर्धनम् 1.29	वसिष्ठ	ब्राह्मणस्पति	-	6
(16) ज्ञान 10.71	बृहस्पति अङ्गिरस	ज्ञानम्	त्रिष्टुप जगती	11
(17) अक्ष 10.34	कवषऐलूष	अक्षकृषिप्रशंसा	त्रिष्टुप	14

पदपाठकार

<u>आचार्य</u>	<u>वैद</u>
1. शाकल्य	ऋग्वेद
2. रावण	ऋग्वेद
3. आत्रेय	तैत्तिरीय -संहिता
4- गार्ग्य	सामवेद

सायणभाष्य कृमानुसार →

- कृष्ण-यजुर्वेद (तैत्तिरीय -संहिता)
- ऋग्वेद (शाकल्य संहिता)
- शुक्ल-यजुर्वेद (काण्व-संहिता)
- सामवेद (कौण्डिन्य संहिता)
- अथर्ववेद (शौनक-संहिता)
- सामवेद के उपाठों ब्राह्मणों पर भाष्य
- आरण्यक (तैत्तिरीय, ऐतरेय)

[Unit-3]

[दर्शन साहित्य का सामान्य-परिचय]

भारतीय-दर्शन

आस्तिक
(सांख्य, योग, न्याय, वैशेषिक,
मीमांसा, वेदान्त)

नास्तिक
(चार्वाक, जैन,
बौद्ध)

दर्शन	→	प्रवर्तक आचार्य
सांख्य	→	कपिल
योग	→	पतञ्जलि
न्याय	→	गौतम
वैशेषिक	→	कणाद
पूर्वमीमांसा	→	जैमिनि
उत्तरमीमांसा (वेदान्त)	→	बादरायण
चार्वाक/लौक्यत	→	बृहस्पति/चार्वाक
जैन	→	ऋषभदेव / महावीर स्वामी
बौद्ध	→	महात्मा गौतम बुद्ध

दर्शन	ग्रन्थ	अध्याय	सूत्र	प्रमाण	पदार्थ	प्रमुख सिद्धि/वाद
सांख्य	सांख्यसूत्र	6	537	3	25	सत्कार्यवाद परिणामवाद
योग	योगसूत्र	4 पाद	195	3	26	सत्कार्यवाद/ संश्लेषवाद
न्याय	न्यायसूत्र	5	60-70	4	16	असत्कार्यवाद/ सिद्धिपात्रवाद
वैशेषिक	वैशेषिकसूत्र	10	370	2	7	परमाणुवाद/ यत्तुपात्रवाद
पूर्वमीमांसा	मीमांसासूत्र	12	2644	6		अनूपर्ववाद
उत्तरमीमांसा (वेदान्त)	ब्रह्मसूत्र	4	555	6	2	विवर्तवाद मायावाद

प्रमुख दर्शनशास्त्री के प्रथम सूत्र →

पूर्वमीमांसा → 'अथातो धर्मभिलासा'

वेदान्तसूत्र → 'अथातो ब्रह्मभिलासा'

वैशेषिक-सूत्र → 'अथातो धर्म व्याख्येयम्'

योग-सूत्र → 'अथ योगानुशासनम्'

सांख्य-सूत्र → 'अथ त्रिविध दुःखवात्यन्त निवृत्तिरत्यन्तपुरुषार्थः'

न्याय-सूत्र → 'प्रमाणप्रमेयसंशय प्रत्योपन दृष्टान्तसिद्धान्तावयव

-तर्कनिर्णयवादजल्पवितण्डाद्वैवाभासकल्पजातिनिग्रह-

-स्थानानामन्तत्त्वज्ञानानिःश्रेयसाधिगमः'

प्रमाण →

दर्शन

चार्वाक

जैन

बौद्ध

न्याय

वैशेषिक

सांख्य

योग

मीमांसा-प्रभाकर

मीमांसा-भाट्ट

वेदान्त

पौंडालिक

प्रमाण संप्रत्यय

1. प्रत्यक्ष

2. प्रत्यक्ष, अनुमान

2. प्रत्यक्ष, अनुमान

4. प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान, शब्द

2. प्रत्यक्ष, अनुमान

2. प्रत्यक्ष, अनुमान, शब्द

3. प्रत्यक्ष, अनुमान, योग

5. प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान, शब्द, अर्थापत्ति

6. प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान, शब्द, अर्थापत्ति, अभाव

6. प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान, शब्द, अर्थापत्ति, अभाव

8. प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान, शब्द,

अर्थापत्ति, अभाव, सम्भव, हेति

तत्त्व मीमांसा →

<u>दर्शन</u>	<u>तत्त्व</u>
1. न्याय	16 पदार्थ
2. वैशेषिक	7 पदार्थ
3. सांख्य	25 तत्त्व
4. योग	26 तत्त्व
5. वेदान्त	2 (जीव, ब्रह्म)
6. मीमांसा (भाट्ट)	5 (द्रव्य, गुण, कर्म, सामान्य, शक्ति)
मीमांसा (प्रभाकर)	8 (द्रव्य, गुण, कर्म, सामान्य, समवाय, शक्ति, संख्या, सादृश्य)
7. चार्वाक	4 (पृथ्वी, अन्न, तेज, वायु)
8. जैन	2 पदार्थ (जीव, अजीव)
9. बौद्ध	2 (स्वल्पलक्षण, सामान्य लक्षण)

आचार्य मीमांसा →

- 1- सांख्यवाद → नैयायिक
- 2- असंख्यवाद → माध्यमिक बौद्ध (शून्यवाद)
- 3- पंडितवाद → सांख्य, योग, वेदान्त एवं विज्ञानवादी
- 4- विवर्तवाद → वेदान्त
- 5- दृष्टि सृष्टिवाद → शंकराचार्य
- 6- प्रतिबिम्बवाद → प्रत्यभिज्ञा आभासवाद, अभिनवगुप्त, शिव
- 7- स्वरूपवाद → प्रभाकर
- 8- आत्मसंख्यावाद → विज्ञानवादी बौद्ध
- 9- अनात्मवाद → शून्यवादी

10. बून्यवाद

बौद्ध

11. उत्पत्तिवाद / कृतिवाद

महलील्लट (मीमांसक)

12. भुक्तिवाद

भट्टनाथक (सांख्य)

13. अनुमितिवाद / ज्ञप्तिवाद

शङ्कर (न्याय)

14. अस्मिन्न्यक्तिवाद

अभिनवगुप्त (वेदान्त)

15. व्यक्तिवाद

आनन्दवर्धन

16. ज्ञाततावाद

कुमारिल

17. त्रिपुटीप्रत्यक्षवाद

प्रभाकर

18. अनिर्वचनीयउप्यातिवाद

शंकराचार्य

19. अस्यधाउप्यातिवाद

नैयायिक (गौतम)

20. विपरीताउप्यातिवाद

कुमारिल

21. विवैकउप्याति

सांख्य

प्रामाण्यवाद →

सांख्य - योग → स्वतः प्रामाण्य

स्वतः अप्रामाण्य

न्याय - वैशेषिक → स्वतः प्रामाण्य

पुतः अप्रामाण्य

मीमांसा → प्रामाण्य स्वतः

अप्रामाण्य पुतः

वेदान्त → प्रामाण्य स्वतः

अप्रामाण्यः पुतः

बौद्ध → प्रामाण्यः पुतः

अप्रामाण्य स्वतः

जैन → प्रामाण्य एवं अप्रामाण्य दोनों कहीं स्वतः
कहीं पुतः।

सम्प्रदाय

भाचार्य

भाष्य

अद्वैत

शाङ्कर

शास्त्रीयिक-भाष्य

द्वैत

मध्व

पूर्णप्रज्ञभाष्य

द्वैताद्वैत

निम्बार्क

वेदान्तपाडिजात

शैवविशिष्टाद्वैत

श्रीकण्ठ

शैवभाष्य

भेदाभेद

भास्कर

भास्करभाष्य

विशिष्टाद्वैत

रामानुज

श्रीभाष्य

शुद्धाद्वैत

बल्लभाचार्य

अणुभाष्य

स्वरूपद्वैत

श्रीपञ्चतनतर्कर
- महाचार्य

शक्तिभाष्य

अविभाद्वैत

विज्ञानभिक्षु

विज्ञानभूतभाष्य

अचिन्त्यभेदाभेद

वल्लदेवविद्याभूषण

गौविन्दभाष्य

वीरशैवविशिष्टाद्वैत

श्रीपति

श्रीकृष्णभाष्य

न्यायदर्शन के आचार्यों का कालक्रम →

- आचार्य गौतम (200 ई० पू०)
- आचार्य वात्स्यायन (400 ई०)
- उद्योतकर (600 ई०)
- वाचस्पति मिश्र (900 ई०)
- अयनभट्ट (900 ई०)
- भास्करवर्मा (900 ई०)
- उदयनाचार्य (1000 ई०)
- गंगेश उपाध्याय (13 वीं शताब्दी)

टीका →

सांख्यकारिका →

- 1→ माठर व्याचार्य → माठरवृत्ति
- २→ गौडपाद → गौडपादभाष्य
- ३→ शाङ्कराचार्य → जयमंगलाटीका
- 4→ वाचस्पतिमिश्र → सांख्यतत्वकीमुदी
- ५→ नरसिंह स्वामिन् → सांख्यतत्त्वसंग्रह
- 6→ नारायणतीर्थ → सांख्यचन्द्रिका
- 7→ विज्ञानभिक्षु → सांख्यप्रवचनभाष्य

वेदान्त परम्परा के मूलत्वपूर्ण ग्रन्थकार एवं ग्रन्थ →

शांकर → माण्डूक्यकारिका / 'माण्डूक्य उपनिषद्'

श्रीहर्ष → स्वण्डनस्वण्डनस्वयं, अनिर्वचनीयतासर्वस्व

वाचस्पति मिश्र → शाङ्करभाष्य - भामती टीका

चित्पुत्राचार्य → चित्पुत्राची

विमुक्तानन → इष्टसिद्धि

माधवाचार्य → सर्वदर्शनसंग्रह, विवर्णप्रमेयसंग्रह

मधुसूदनसरस्वती → अद्वैतसिद्धि

उदयनाचार्य → आत्मतत्त्वविवेक, न्यायकुसुमाञ्जलि

सदानन्दयोगी → वेदान्तसार

धर्मराजाध्वरिन् → वेदान्तपरिभाषा → वेदान्तशिखामणि → मणिप्रकाश

गोडपादाचार्य → गोडपादकारिका (रामकृष्णध्वरिन्) (ममदाक्ष)

रामाक्षर → वेदान्तकौमुदी

अप्पयवीरि → सिद्धान्तलेशसंग्रह, न्यायउद्घामणि, वेदान्तकल्पतरुपरि

विद्यादासस्वामी → विवर्णप्रमेयसंग्रह, जीवन्मुक्तिविवेक, पञ्चदशी, वाक्यसुधा, बृहदाद्वयकवार्तिकसार, अनुभूतिप्रकाश

वेदान्तसार की टीकाएँ → 1. सुबोधिनी, 2. विद्वन्मनीषिणी

3. बालबोधिनी
↓
आपदेव

महोपनिषद् → वेदान्तकौस्तुभ

श्रीशंकराचार्य → मनीषाधन्यकं, प्रपञ्चसार, उपदेशरत्न।

माधव → तत्त्वदीप्त

गोडपाद → माण्डूक्यकारिका

वैशेषिक दर्शन →

1. वैशेषिक - सूत्र → कणाद
2. पदार्थधर्मसंग्रह → प्रशास्त्रपाद
3. सप्तपदार्थी → शिवादित्य
4. दशपदार्थशास्त्र → चन्द्र
5. व्योमती → व्योमशिव
6. न्यायकन्दली → श्रीधर
7. किङ्गावली → उदयन
8. लीलावती → श्रीवत्स

तर्कसंग्रह →

1. तर्कसंग्रहदीपिका → भुवनेश्वर
2. पदकृत्य → चन्द्रप्रसिंह
3. न्यायलोचिनी (तर्कसंग्रह पर) → गौवर्धन मिश्र
4. तर्कसंग्रहदीपिका प्रकाशिका → नीलकण्ठ
5. विवृति (तर्कसंग्रहदीपिका पर) → वामनयुगभट्टाचार्य
6. 'भास्करीय' (तर्कसंग्रहदीपिका प्रकाशिका पर) → लक्ष्मीनृसिंह शर्मा
7. छात्राहर्तृधिणी बाल प्रिया (तर्कसंग्रह, तर्कसंग्रहदीपिका, तर्कसंग्रहदीपिका प्रकाशिका पर) → श्री रामानुज तायाचार्य
8. युक्तिमल्लिका → वादिराजतीर्थ
9. विडलाटीका → ठण्डिराजशास्त्री

न्याय दर्शन →

- 1- न्यायसूत्र → गौतम
- 2- न्यायभाष्य → वात्स्यायन
- 3- न्यायवार्तिक → उद्योतकर
- 4- न्यायवार्तिकतात्पर्यटीका → वाचस्पति मिश्र
- 5- न्यायसूची निबंध → वाचस्पति मिश्र
- 6- न्यायसूत्रधार → वाचस्पति मिश्र
- 7- न्यायतात्पर्यपडिष्टुष्टि → उदयाद्वार
- 8- न्यायमन्वजरी → जयन्तभट्ट
- 9- तार्किकरुहा → वरदराज
- 10- तर्कभाषा → केशवमिश्र
- 11- पडिष्टुष्टि → उदयनार्य
- 12- न्यायसार → भास्करवर्मा
- 13- न्यायभूषण → भास्करवर्मा

नव्य न्याय →

- 1- तत्त्वचिन्तामणि → गंगीश उपाध्याय

2- टीका →

प्रभा → यज्ञपति उपाध्याय

ज्ञानलोक → जयदेवमिश्र/पद्मधरमिश्र

दीधिति → रघुनाथ शिंदीमणि

मूलगादाधरी → गदाधर भट्टाचार्य

2. दीधिति (तत्त्वचिन्तामणि) → रघुनाथ शिरोमणि

टीकासु -

रहस्य → मधुसूतनाथ

जगदीश्वरी → जगदीश भट्टाचार्य

गादाधरी → गदाधर भट्टाचार्य

3. 'गूढार्थप्रकाशिनी रहस्य' → मधुसूतनाथ

(भालीक, चिन्तामणि और
दीधिति पत्र)

3. 'जगदीश्वरी' (दीधिति पत्र) → जगदीश भट्टाचार्य

'शब्दशक्तिप्रकाशिका' (शब्दशक्ति पत्र) → जगदीश भट्टाचार्य

4. 'गादाधरी' (दीधिति पत्र) → गदाधर भट्टाचार्य

न्यायसूत्रवृत्ति → विश्वनाथ

भाषा-परिच्छेद → विश्वनाथपञ्चातन

तर्कभाषा की टीकासु →

ब्रह्मवला → गोपीनाथ

तत्त्वप्रबोधिनी → गणेश दीक्षित

तर्ककोमुदी → दिनकर भट्ट

तर्कभाषा प्रकाश → गोवर्धन मिश्र

तर्कभाषा प्रकाश → अरवण्डानन्द स्वरुवती

तर्कभाषा प्रकाशिका → चिन्मय भट्ट

तर्कभाषा प्रकाशिका → गौरीकांत

तर्कभाषा प्रकाशिका → बलभद्र

तर्कभाषा प्रकाशिका → बागीश भट्ट

<u>तर्कभाषा सप्तमण्डली</u>	→	माधवदेव
<u>न्यायप्रदीप</u>	→	विश्वकर्मा
<u>न्यायसंग्रह</u>	→	रामलिङ्ग
<u>वडिभाषादर्पण</u>	→	भास्करभट्ट

नव्य न्याय →

- [गंगेश उपाध्याय (13वीं शताब्दी)
- [रघुनाथ शिरोमणि (16वीं शती)
- [मधुसूतनाथ (16वीं शती)
- [जगदीश भट्टाचार्य (17वीं शती)
- [गदाधर भट्टाचार्य (17वीं शती)

पूरुवमीमांसा →

1. शाबरभाष्य → शाबरस्वामी
2. श्लोकवार्तिक → कुमाडिलभट्ट
3. तन्त्रवार्तिक → कुमाडिलभट्ट
4. दुष्टीका → कुमाडिलभट्ट
5. विधिविवेक | भावना | विभ्रम | → मण्डन मिश्र
मीमांसानुक्रमणी
6. न्यायरत्नमाला | व्याप्तिविवेक → पार्थसारथि मिश्र
(मण्डन मिश्र)
7. न्यायसुधा → रामेश्वरभट्ट
8. अन्विता → पारितीक्ष मिश्र
9. मीमांसा पारिभाषा → कृष्णकृष्ण

10. मीमांसा ~~का~~ बृहती टीका → प्रभाकर मिश्र

11. मीमांसा न्यायप्रकाश → आपदेव

12. भाट्टालंकार → अनन्तदेव

13. दीपिका → वरदराज

14. अलंकार → दामोदरसूरी

15. प्रभाकर विषय → नन्दीश्वर

16. तन्त्ररहस्य → रामानुजाचार्य

17. वैमितीय न्यायमाला → माधव

योगदर्शन →

1. योगभाष्य → वेदव्यास

2. तत्त्ववैशाली → वाचस्पति मिश्र

3. श्रीपरवृत्ति → धारेश्वर भोष

4. योगवृत्तिक → विज्ञानभिक्षु

5. योगमणिप्रभा → रामानन्द सरस्वती

6. तीर्थन्यायमालाविक्रान्त → माधवाचार्य

जैन-दर्शन →

1. जैनगम → महावीर स्वामी

2. तत्त्वार्थसूत्र → उमास्वामी

3. तत्त्वार्थविगमसूत्र → उमास्वामी

4. आत्ममीमांसा → समलभ

5. न्यायवतार → सिद्धसेन दिवाकर

6. प्रमाणमीमांसा → हेमचन्द्र

7. प्रमाणनयतत्त्वलीकलंकार → देवसूरी

8. प्रमेयकमलमार्तण्ड → प्रभाकरसूरी

बौद्ध-दर्शन →

1. अभिधर्मकीश → वसुवन्धु
2. प्रज्ञापडिमितासूत्र → लंकावताद सूत्र (लंकावताद)
3. ज्ञानप्रधानशास्त्र → काल्यायनीयुत्र
4. अभिसमयकादिका → मैत्रेयनाथ
5. कल्पनामाण्डितिका → कुमादलात
6. माह्यमिककादिका → नागाधुन
7. प्रमाणसमुच्चयवाद → दिङ्नाग
8. प्रमाणवार्तिक → धर्मकीर्ति
9. उपोद्वाद → इतनाकद
10. अभिधर्मकीश → वसुवन्धु
11. अभिधर्मसार → धर्मश्री
12. अभिधर्मवृत्त → आचार्यबोधक

[Unit → 5]

व्याकरण आचार्यों का परिचय →

व्याडि

यास्क - (४०० ई० पू०)

पाणिनि - (५५० ई० पू०)

काल्याण - (५०० ई० पू०)

पतंजलि - (१५० ई० पू०)

भर्तृहरि - (३४० ई०)

जितेन्द्रबुद्धि - (६५० ई०)

जयादित्य वामन - (६६० ई०)

कैपट - (१०३५ ई०)

हेमचन्द्र - (११४५ - १२१९ ई०)

हउदत्त - (१२०० ई०)

अनुभूतिस्वरूपार्य - (१२५० ई०)

भट्टोजिदीक्षित - (१५५० ई०)

वउदराज - (१४७५ ई०)

नागेशभट्ट - (१५०० ई०)

अपार्य ढदूषिदीक्षित कृत वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी के
प्रमुख प्रकरणों का क्रम →

1. सङ्गप्रकरणम्
2. पठिमावा
3. संधि
4. षड्लिङ्ग
5. अव्यय
6. स्त्रीलिङ्ग
7. काङ्क
8. समास
9. तद्धित
10. तिङन्त
11. प्रत्ययान्ततिङन्त (णिय. सन् आदि) प्रकरणम्
12. आत्मनेपद
13. परस्मैपद
14. कृदन्त
15. वैदिक प्रकरण
16. स्वडप्रकरणम्

सिद्धान्तकौमुदी की टीकाएँ →

1. तत्त्वबोधिनी → ज्ञानेन्द्र स्वयंवरणी
2. बालमनीरमा → वासुदेव दीक्षित
3. प्रौढमनीरमा → भट्टोजिदीक्षित
4. लघुशब्देन्दुशेखर → नागेशभट्ट
5. शब्दरत्न → हरिदीक्षित

लघुसिद्धान्त कौमुदी के प्रमुख प्रकरणों का क्रम →

१. संज्ञाप्रकरणम्

सन्धिप्रकरणम्

२. अच्सन्धिः

३. हल्सन्धिः

४. विसर्गसन्धिः

सुबन्तप्रकरणम्

५. अजन्तपुंलिङ्गाः

६. अजन्तस्त्रीलिङ्गाः

७. अजन्तनपुंसकलिङ्गाः

८. हलन्तपुंलिङ्गाः

९. हलन्तस्त्रीलिङ्गाः

१०. हलन्तनपुंसकलिङ्गाः

११. अव्ययानि

तिङन्तप्रकरणम्

१२. भ्वादयः

१३. अदादयः

१४. जुहोत्यादयः

१५. दिवादयः

१६. स्वादयः

१७. तुदादयः
१८. रुधादयः
१९. तनादयः
२०. क्र्यादयः
२१. चुरादयः
२२. ण्यन्तप्रक्रिया
२३. सन्नन्तप्रक्रिया
२४. यङन्तप्रक्रिया
२५. यङ्लुक्प्रक्रिया
२६. नामधातवः
२७. कण्ड्वादयः
२८. आत्मनेपदप्रक्रिया
२९. परस्मैपदप्रक्रिया
३०. भावकर्मप्रक्रिया
३१. कर्मकर्तृप्रक्रिया
३२. लकारार्थप्रक्रिया

कृदन्तप्रकरणम्

३३. कृदन्ते कृत्यप्रक्रिया
३४. पूर्वकृदन्तम्
३५. उणादयः
३६. उत्तरकृदन्तम्

विभक्तिप्रकरणम्

३७. विभक्त्यर्थाः

समासप्रकरणम्

३८. समासाः

३९. अव्ययीभावः

४०. तत्पुरुषः

४१. बहुव्रीहिः

४२. द्वन्द्वः

४३. समासान्ताः

तद्धितप्रकरणम्

४४. तद्धिताः

४५. अपत्याधिकारः

४६. रक्ताद्यर्थकाः

४७. चातुरर्थिकाः

४८. शैषिकाः

४९. विकारार्थकाः

५०. ठगधिकारः

५१. यदधिकारः

५२. छयतोऽधिकारः

५३. ठजधिकारः

५४. त्वतलोरधिकारः

५४. त्वतलोरधिकारः

५५. भवनाद्यर्थकाः

५६. मत्वर्थीयाः

५७. प्राग्दिशीयाः

५८. प्रागिवीयाः

५९. स्वार्थिकाः

स्त्रीप्रत्ययप्रकरणम्

६०. स्त्रीप्रत्ययाः

[Unit - 7]

साहित्य - आचार्यों का कालक्रम →

1. भरत मुनि - (100-300 ई.पू.)
2. भास - (100-200 ई.पू.)
3. कालिदास - (ई.पू. प्रथम शताब्दी)
4. अश्वघोष - (प्रथम शताब्दी ई.)
5. बृहस - (3-4 शताब्दी)
6. विशाखदत्त - (5-6 शताब्दी)
7. भारवि - 60-615 (छठी श.)
8. दण्डी - छठी शताब्दी
9. भर्तृहरि - छठी श.
10. भामह - छठी शताब्दी
11. माघ - सातवीं शताब्दी (675)
12. बाणभट्ट - सातवीं श. पूर्वार्ध
13. हर्षवर्धन - सातवीं श. पूर्वार्ध
14. भवभूति - सातवीं शताब्दी
15. भट्टनाटायण - 7-8 शताब्दी
16. बामन - 8 शताब्दी
17. आनन्दवर्धन - 850 ई.
18. त्रिविक्रमभट्ट - 10 शताब्दी पूर्वार्ध
19. क्षेमेन्द्र - 11 शताब्दी
20. बिल्हण - 11 शताब्दी
21. कुन्तक - 11 शताब्दी
22. भीष्म - 11 शताब्दी पूर्वार्ध
23. मम्मट - 12 शताब्दी उत्तरार्ध (12 शताब्दी पू.)

24. कल्हण - 12 शताब्दी
25. श्रीहर्ष - 12 शताब्दी 30
26. विश्वनाथ - 14 शती
27. सुष्यदीक्षित - 16 शती
28. जगन्नाथ - 17 शती
29. अम्बिकादत्त व्यास -
1850-1900

काव्यशास्त्र सम्प्रदाय →

- ① ऋतमुनि (३०० ई० पू०)
- ② भामह (४०० ई०)
- ③ वामन (६०० ई०)
- ④ आनन्दवर्धन (८५० ई०)
- ⑤ कुन्तक (११वीं शती उत्तरार्ध)
- ⑥ क्षेमेन्द्र - (११वीं शती)

भारतीय काव्यशास्त्र के प्रमुख आचार्य एवं उनके ग्रंथ कालक्रमानुसार सूची-

आचार्यों के नाम	ग्रन्थ	समय
भरत मुनि	नाट्यशास्त्र	2री शती ई. पू. से 2री ई. पू.
भामह	काव्यालंकार (6 भाग)	6ठी शती का मध्यकाल
दंडी	काव्यादर्श (4 भाग)	7वींशती का उत्तरार्द्ध
वामन	काव्यालंकारसूत्रवृत्ति(5 परिक्षेद)	8वीं-9वीं शती के बीच
उद्भट	काव्यालंकार सार संग्रह	9वीं शती का पूर्वार्द्ध
आनंदवर्धन	ध्वन्यालोक	9वीं शती का मध्यभाग
शङ्कुक		9वीं शती का आरंभ
रुद्रट	काव्यालंकार (16 अध्याय)	10वीं शती
राजशेखर	काव्यमीमांसा	880-920 के बीच
धनंजय	दशरूपक	10वीं शती
भट्टनायक	हृदयदर्पण	10वीं शती का मध्यकाल
लोल्लट	-	उद्भट और अभिनव गुप्त के बीच

अभिनव गुप्त	ध्वन्वालोकलोचन, अभिनव भारती	10वीं-11वीं शती
कुंतक	वक्रोक्तिजीवित	10वीं-11वीं शती
भोजराज	शृंगार प्रकाश, सरस्वती कंठाभरण	11वीं शती का पूर्वार्द्ध
महीमभट्ट	व्यक्तिविवेक	11वीं शती का मध्यकाल
क्षेमेन्द्र	कवि कंठाभरण, दशावतार चरित, औचित्रविचारचर्चा	11वीं शती का उत्तरार्द्ध
मम्मट	काव्यप्रकाश	11वीं शती का उत्तरार्द्ध
हेमचंद्र	काव्यानुशासन	12वीं शती
रुय्यक	अलंकार सर्वस्व	12वीं शती का मध्यकाल
जयदेव	चन्द्रालोक	13वीं शती का मध्यभाग
विश्वनाथ	साहित्यदर्पण	14वीं शती
पंतजलि	महाभाष्य	—
रूपगोस्वामी	उज्ज्वलनीलमणि, नाट्यचंद्रिका, भक्तिरसामृतसिंधु	15वीं-16वीं शती
केशव मिश्र	अलंकार शेखर	16वीं शती का उत्तरार्द्ध

केशव मिश्र

अलंकार शेखर

16वीं शती का
उत्तरार्द्ध

अप्पयदीक्षित

चित्रमीमांसा, कुवलयानंद,
वृत्तिवर्तिका

16वीं-17वीं शती



भारतीय काव्यशास्त्र के प्रमुख ग्रंथ

भारतीय काव्यशास्त्र के अन्य आचार्य एवं उनके ग्रंथ
कालक्रमानुसार सूची-

आचार्यों के नाम	ग्रन्थ	समय
रूद्रभट्ट	शृंगारतिलक	—
मुकुलभट्ट	अभिधानवृत्तिमात्रिका	9वीं-10वीं शती
सागरनंदी	—	11वीं शती का आरंभ
भट्टतौत	काव्यकौतुक	—
सागरनंदी	नाटकलक्षण रत्नकोष	—
रामचंद्र- गुणचन्द्र	नाट्यदर्पण	12वीं शती का पूर्वार्द्ध
वाग्भट्ट प्रथम	वाग्भाट्टलंकार	12वीं शती का उत्तरार्द्ध
वाग्भट्ट द्वितीय	काव्यानुशासन	14वीं शती के आस-पास
कक्कोक	रतिरहस्य	—
अमरचंद्र- आरिसिंह	काव्यकल्पलता	—
देवेश्वर	कविकल्पलता	—

देवेश्वर	कविकल्पलता	—
भट्टतौत	काव्यकौतुक	—
शारदातनय	भावप्रकाश	13वीं शती का मध्यभाग
सिंह भूपाल	रसार्णसुधारक, संगीत सुधारक	13वीं शती का मध्यभाग
अमर चंद्र-	—	13वीं शती का मध्यभाग
विद्याधर	एकावली	13वीं-14वीं शती
विद्यानाथ	प्रतापरूद्रयशोभूषण	13वीं-14वीं शती
भानुदत्त मिश्र	रस तरंगिणी, रसमंजरी, रसपारिजात, अलंकारतिलक	13वीं-14वीं शती
कवि कर्णपूर	अलंकारकौस्तुभ	16वीं-17वीं शती
कविचंद्र	काव्यचंद्रिका	—
विश्वेश्वर पाण्डेय	अलंकार मुक्तावली, अलंकार कौस्तुभ	—
मधुसूदन सरस्वती	भगवदभक्ति रसायन	—

भरतमुनि

“विभावानुभावव्यभिचारि
संयोगाद्रसनिष्पत्तिः।”

दण्डी

“वाक्यस्य, ग्राम्यता योनिर्माधुर्ये दर्शितो रसः।”

धनञ्जय

“विभावैरनुभावैश्च सात्त्विकैर्घ्यं भिचारिभिः।
आनीयमानः स्वाद्यत्व स्थायी भावो रसः स्मृतः॥”

अभिनवगुप्त

“सर्वथा रसनात्मक वीतविघ्न प्रतीतिग्राह्यो भाव
एवं रसः।”

मम्मट

“व्यक्तः स तैर्विभावाद्यौः स्थायी भावो रसः
स्मृतः।”

पं. राज

“अस्त्यत्रापि रस वै सः रस होवायं लब्ध्वानन्दी
भवति।”

जगन्नाथ

विश्वनाथ

“वाक्य रसात्मक काव्यम्।”

विश्वनाथ

“विभावेनानुभावेन व्यक्तः संचारिणी तथा।
रसतामेति रत्यादिः स्थायी भावः सचेतसाम्॥”

विश्वनाथ

सत्वोद्रेकादखण्डस्वप्रकाशानन्दचिन्मयः।वेद्यान्तर
स्पर्शशून्यो ब्रह्मास्वाद सहोदरः॥
लोकोत्तरचमत्कारप्राणः कैश्चित्प्रमातृभिः।
स्वाकारवदभिन्नत्वेनायमास्वाद्यते रसः॥”

वामन

“दीप्त रसत्वं कांतिः।”

भोजराज

“रसाः हि सुखदुःखरूपाः।”

क्षेमेन्द्र

“औचित्यं रससिद्धस्य स्थिरं काव्यस्य जीवितम्।”

मम्मट

“व्यक्तः स तैर्विभावाद्यौः स्थायी भावो रसः
स्मृतः।”

पं. राज
जगन्नाथ

“अस्त्यत्रापि रस वै सः रस होवायं लब्ध्वानन्दी
भवति।”

विश्वनाथ

“वाक्य रसात्मक काव्यम्।”

विश्वनाथ

“विभावेनानुभावेन व्यक्तः संचारिणी तथा।
रसतामेति रत्यादिः स्थायी भावः सचेतसाम्॥”

विश्वनाथ

सत्वोद्रेकादखण्डस्वप्रकाशानन्दचिन्मयः।वेद्यान्तर
स्पर्शशून्यो ब्रह्मास्वाद सहोदरः॥
लोकोत्तरचमत्कारप्राणः कैश्चित्प्रमातृभिः।
स्वाकारवदभिन्नत्वेनायमास्वाद्यते रसः॥”

वामन

“दीप्त रसत्वं कांतिः।”

भोजराज

“रसाः हि सुखदुःखरूपा।”

क्षेमेन्द्र

“औचित्यं रससिद्धस्य स्थिरं काव्यस्य जीवितम्।”

रामचंद्र-
गुणचंद्र

“सुखदुःखात्मको रसः ।”

रस सूत्र के व्याख्याता आचार्य, उनके सिद्धान्त और दार्शनिक मत

रस के चार प्रमुख व्याख्याकार हैं- भट्ट लोल्लट, भट्ट शंकुक, भट्ट नायक और अभिनवगुप्त, जिन्होंने रस सिद्धान्त पर व्यापक रूप से अपना मत रखा है। भरत के सूत्र का सर्वप्रथम व्याख्याता भट्ट लोल्लट हैं।

आचार्य	दर्शन	संयोग / सम्बन्ध	निष्पत्ति	सिद्धान्त
भट्ट लोल्लट	मीमांसा	उत्पाद्य- उत्पादक	उत्पत्ति	उत्पत्तिवाद(आरोप)
भट्ट शंकुक	न्याय	अनुमाप्य- अनुमापक	अनुमिति	अनुमितिवाद
भट्ट नायक	सांख्य	भोज्य- भोजक	भुक्ति	भुक्ति (भोगवाद)
अभिनवगुप्त	शैव	व्यंग्य- व्यंजक	अभिव्यक्ति	अभिव्यक्ति वाद

[3] → पाश्चात्य-काव्यशास्त्र :- अरस्तू, लाओप्याडनस, क्रीच

[1] अरस्तू

जन्म → 384 ईसापूर्व

मृत्यु → 322 ईसापूर्व

→ सुनानी दार्शनिक थे।

→ वे प्लेटो के शिष्य तथा सिक्रदस के गुरु थे।

→ जन्म → स्टेगेरिया नामक ग्राम में हुआ था।

[सिद्धांत → अनुकरण का सिद्धान्त]

→ अरस्तू का राजनीतिक पद सबसे प्रसिद्ध ग्रंथ → 'पोलिटिक्स'

संस्था → 4 लाघिप्रियम

पिता → नेकीमेंक्स

पुत्र → नेकीमेंक्स

पत्नी → (1) पिथियास (2) हूपिलिस

→ स्पेंस में अकादमी की स्थापना।

ग्रन्थ → 47

रचना →

प्रसिद्ध ग्रन्थ → पैट्रिपोइएतिकैस

English → On Poetics

→ पौलिटिक्स

→ नेकीमेंक्स एथिक्स

→ यूदेमिथन एथिक्स

→ स्टेटैतीडिक्स

→ ट्रिस्टी ऑफ अनिमल्स

→ पार्ट्स " "

→ मूवमेंट " "

→ प्रोग्रेसन " "

→ जनरेशन " "

→ स्पेंस संड स्पेंसिबिलिया

→ ऑन मेमोरी

→ ऑन स्लीप

→ ऑन ड्रीम्स

→ पौरटिक्स

→ मेटाफिजिक्स

→ प्रोब्लैम्स

→ ऑन दिविनेशन इन स्लीप

→ ऑन लैनथ संड शोर्ट नैस ऑफ लाइफ

→ ऑन यूथ, मील्ड सेज, लाइफ संड डेथ संड स्पेंसिबिलिशन

→ फिजिक्स

→ ऑन दि हिवेन

→ ऑन जेनरेशन संड कंजेशन

→ मैटेरीलीज

→ ऑन दी यूनिवर्स

→ ऑन दी सोल

काव्य के तीन रूप →
→ प्रतीयमान रूप
→ संभाव्य रूप
→ आदर्श रूप

[२.] → लॉन्ग इन्स →

पन्थ → लगभग प्रथम शताब्दी से द्वितीय शताब्दी के मध्य
यूनानी भाषा का नाम → लींगिनुस तथा
अंग्रेजी → लॉन्ग इन्स

प्रमुख रचना → पेट्रिक्स्

अंग्रेजी अनुवाद → "ऑन द स्बल इम"

ऑन द स्बल इम को ही उदात्त की संज्ञा दी गई।

[३.] → क्रोय →

पूरा नाम → बेनेदैतो क्रोय

→ अभिव्यञ्जनावाद के प्रवर्तक

→ आत्मवादी दार्शनिक विचारक

प्रमुख रचना → एस्थेटिक्स

→ दार्शनिक ढंग से प्रभावित होकर अभिव्यञ्जनावाद सिद्धान्त का प्रतिपादन।

[Unit → 9]

[रामायण] →

'रामायण' की रचना → 'बाल्मीकि ऋषि' ने की।

→ काण्ड → 7

सर्ग → 500

श्लोक → 24000 ['यदुर्विशिति सादस्रीसंहिता']

छन्द → अनुष्टुप्

रस → करुण

काण्डों का क्रम →

1. बालकाण्ड → (7 ४ सर्ग)

2. अयोध्याकाण्ड → (11 9 सर्ग)

3. अरण्यकाण्ड → (7 5 सर्ग)

4. किष्किन्ध्या-काण्ड → (6 ४ सर्ग)

5. सुन्दर-काण्ड → (6 8 सर्ग)

6. युद्ध-काण्ड → (1 2 8 सर्ग)

7. उत्तर-काण्ड → (1 1 1 सर्ग)

रामायण आधारित महाकाव्य →

1. रघुवंशम् → कालिदास
2. रामचरित → कवि अभिनन्द
3. रावणवध → भट्टि कवि
4. सैतुबन्ध → प्रवर्धसेन
5. आनकीदण्डण → कुमाउदास
6. रामायणमंजरी → लक्ष्मीन्द्र
7. रघुनाथाष्टयुद्ध → वामनभट्ट बाण
8. राघवपाण्डवीय → माधवभट्ट
9. रामायणसार → रघुनाथ

रामायण पर आधारित रूपक ग्रन्थ →

1. प्रतिमानटक → भास
2. अभिषेकनाटक → भास
3. ~~विजयनाटक~~ कुन्दमाला → दिङ्नाग
4. उत्तररामचरित → भवभूति
5. महावीरचरित → भवभूति
6. बालरामायण → राजश्रीशंकर
7. अनर्थराघव → मुशङ्गि
8. प्रसन्नराघव → जयदेव
9. आश्चर्यचूड़ामणि → शक्तिभट्ट
10. आनकीपरिणय → रामभट्ट
11. अद्भुत दर्पण → महादेव
12. हनुमन्नाटक (महानाटक) → दामोदरमिश्र

रामायण पर आधारित चम्पू काव्य →

1. रामायणचम्पू → श्रीधर
2. इतर चम्पू → वेङ्कटाध्वरि
3. चम्पू राघव → अमरनाथ
4. अमीरराघव → दिवाकर
5. रामचन्द्रचम्पू → विश्वनाथ सिंह
6. रामकथा → अनन्तभट्ट
7. चम्पूरामायण → लक्ष्मणभट्ट

रामायण पर आधारित चित्रकाव्य →

- (1) सादरवाणीयम्
- (2) विलोमवाक्य
- (3) रामलीलामृतम्

रामायण की टीकाएँ →

- रामायण तत्व दीपिका → महेश्वर तीर्थ
रामायण दीपिका → वैद्यनाथ दीक्षित
स्वार्थसार → वेङ्कटाकृष्णध्वरी / वेङ्कटेश
रामायणतिलक → नागोजिभट्ट
तिलक → रामवर्मा
विवेक तिलक → बरदायज
रामायण शिरोमणि → शिव सहाय
रामायण भूषण → गोविन्दराज
तीर्थ व्याख्या → महेश्वर तीर्थ
रामचन्द्रिका → केशवदास
विवरण टीका → ईश्वरदीक्षित
बाल्मीकि हृदय → अहीबल झात्रेय
अमृतकटक → माधवयोगी
रामायण तात्पर्यसंग्रह → सम्पददीक्षित
धर्माकूट → त्रयम्बक मडवी

[महाभारत] →

मंगलाचरण →

“माराधनीं नमस्कृत्य नतं चैव नतीलमम् ।
देवीं सदस्वतीं चैव तती - अयमुदीरयेत्” ।

रचयिता → वेदव्यास

पर्व → 18

1. आदि पर्व

2. सभा

3. वन

4. विराट

5. उद्योग

6. भीष्म

7. द्रोण

8. कर्ण

9. शल्य

10. सीतलिक

11. स्त्री

12. शान्ति

13. अनुशासन

14. अश्वमेध

15. आश्रमवासी

16. मौसल

17. महाप्रस्थानिक

18. स्वर्गादीहण

महाभारत पर आधारित महाकव्य →

1. किरातार्जुनीयम् → भासवि
2. शिशुपालवधम् → माघ
3. नैवर्धनीयचरितम् → श्रीहर्ष
4. भारतमण्डपिनी → क्षेमेन्द्र
5. नलाभ्युदय → वामनभट्ट बाण

महाभारत पर आधारित नाटक →

1. दूतव्यतीर्कच → भास
2. मध्यमव्यायोग → भास
3. बालचरित → भास
4. उरुभङ्ग → भास
5. पञ्चडात्र → भास
6. दूतवाक्य → भास
7. कणभिर → भास
8. अभिज्ञानशाकुन्तलम् → कालिदास
9. वेणीसंहार → भट्टनाटायण
10. बालभारत → रामेश्वर
11. किरातार्जुनीयव्यायोग → वत्सराज

महाभारत पर आधारित चम्पू काव्य →

1. नलचम्पू → त्रिविक्रमभट्ट
2. भारतचम्पू → भट्टनरभट्ट
3. पाञ्चालीस्वयम्बरचम्पू → ताडायणभट्ट
4. द्वीपदीपडिणायचम्पू → चन्द्रकवि

महाभारत की टीकाएँ →

- 1- दैवबोध → ज्ञानदीपिका
2. वैशम्पायन → मौढ्यधाम
3. विमलबोध → विषमश्लोकी
4. ताडायण सर्वज्ञ → भारतार्थ प्रकाश
5. चतुर्भुज मिश्र → भारतोदय प्रकाश
6. आनन्दपूर्ण → जयकौमुदी
7. मधुन मिश्र → भारतसंग्रहदीपिका
8. वादिराज → लक्ष्मभट्ट
9. ताडायणसर्वज्ञ → भारतार्थ प्रकाश
10. नीलकण्ठ चतुर्थ → भारतभावदीप
11. ताडायण → निगूढार्थ पदवी छिनी

[पुराण] → 10

“मद्वयं भद्वयं त्रैव ब्रह्मयं वचतुष्टयम् ।

अनापलिङ्गाकूस्कानि पुराणानि पृथक्पृथक् ॥”

मद्वयम् - 1. मत्स्य पुराण , 2. मार्कण्डेय पुराण

भद्वयम् - 3. भागवत पुराण 4. भविष्य पुराण

ब्रह्मयम् - 5. ब्रह्म पुराण , 6. ब्रह्मवैवर्त , 7. ब्रह्माण्ड

वचतुष्टयम् - 8. विष्णु 9. वायु 10. वाताह 11. वामन

अ - 12. अग्नि पुराण , ना - 13. नाड्य पुराण

प - 14. पद्म पुराण , लिं - 15. लिङ्ग पुराण

ग - 16. गरुड पुराण कू - 17. कूर्म पुराण

सू 18. स्कन्द पुराण

पद्मपुराण → ६ खण्ड

1. सृष्टि खण्ड
2. भूमि खण्ड
3. स्वर्ग
4. पाताल
5. उत्तर

वायुपुराण / शिवपुराण → 4 भाग

1. प्रक्रिया पाद
2. उपोद्घात
3. अतुषड्
4. अपसंहार

ब्रह्मवैवर्तपुराण → 4 खण्ड

1. ब्रह्म
2. प्रकृति
3. गणेश
4. श्रीकृष्ण - जन्म

स्कन्दपुराण → 7 खण्ड

1. माछेखण्ड
2. वैष्णव
3. ब्रह्म
4. काशी
5. अमन्ती (देवा)
6. नाग (ताप्ती)
7. प्रभास खण्ड

कूर्म-पुराण → 4 संहिताएँ

1. ब्राह्मी
2. भगवती
3. सौंती
4. वैष्णवी

ब्रह्माण्ड-पुराण →

1. प्रक्रिया
2. उत्पत्ति
3. अपोद्धात
4. उपसंहार

[अर्थशास्त्र]

→ अर्थशास्त्र, कौटिल्य या चाणक्य (चौथी शती ई.पू.)
काठा रचित ग्रन्थ है।

अधिकरण → 15

विषय / प्रकरण → 180

अध्याय → 150

श्लोक → 6000

[विनयाद्यष्टधर्मस्थं कण्टकं योगमण्डलम् ।
षाड्गुण्यं व्यसनं चैव अभियारुह्य लक्ष्म्यं स्वयम् ॥
साङ्गामिक सङ्घवृत्तम् आवलं दुर्गलिम्भनम् ।
तथैव निषदं तन्त्रयुक्तिः कौटिल्यसंग्रहे ॥]

1. विनयाधिकाङ्किक
2. अष्टाष्ट प्रचारम्
3. धर्मस्थायीय
4. कण्टकशोधनम्
5. योगवृत्त
6. मण्डलयोगीनि
7. षाड्गुण्यं (सन्धि कर्म)
8. व्यसनाधिकाङ्किक
9. अभियारुह्य लक्ष्म्यं
10. साङ्गामिक

11. सङ्घवृत्त
12. आवलीयसम्
13. दुर्गलिम्भोपाय
14. औपनिषद
15. तन्त्रयुक्तिः

विनयाधिकारिकम् → [18 प्रकरण]

- | | |
|---|--------------------|
| 1. विद्यासमुद्देशः | 11. मन्त्राधिकारः |
| 2. बृद्धसंयोग | 12. दूतप्रणिधिः |
| 3. इन्द्रियजयः | 13. राजपुत्रद्वयम् |
| 4. अमात्योत्पत्तिः/ राजर्षिवृत्तम् | 14. भवरज्जुवृत्तम् |
| 5. मन्त्रीपुटोद्दितीत्पत्तिः | 15. भवरज्जु चकृतिः |
| 6. उपधाभिर्ज्ञातं चाक्षौ च ज्ञातमयमात्या-
- नाम् | 16. राजप्रणिधिः |
| 7. गूढपुरुषोत्पत्तिः | 17. निशातप्रणिधिः |
| 8. गूढपुरुषप्रणिधिः | 18. आत्मरहितकम् |
| 9. स्वविषये कृत्याकृत्यपक्षरक्षणम् | |
| 10. परविषये कृत्याकृत्यपक्षीपग्रह | |

[मनुस्मृति की टीकाएँ] →

1. मेघातिथि → मनुभाष्य
2. गोविन्दराय → मन्वाश्रयानुसारीणी
3. कुल्लूक भट्ट → मन्वर्थमुक्तावली
4. सर्वज्ञ तारायण → मन्वर्थ विवृति
5. राघवानन्द सरस्वती → मन्वर्थ चन्द्रिका
6. नन्दन आचार्य → नन्दिनी
7. रामचन्द्र → मनुव्याख्या
8. भारद्वाज → मनुशास्त्र विवर्ण
9. माण्डूक्य दीक्षित → सुखवीथिनी

[याज्ञवल्क्यस्मृति] → 3 अध्याय

- 1- आचार्याध्याय (13 प्रकरण)
- 2- व्यवहाराध्याय (25 प्रकरण)
- 3- प्रायश्चित्त-अध्याय (6 प्रकरण)

Total → 44 प्रकरण

~~विवरण~~

विश्वरूप के अनुसार श्लोक → 1003

विवर्तन के अनुसार → 1009

व्यवहाराध्याय → 25 प्रकरण

- | | |
|---------------------------------------|------------------------------------|
| <u>1-</u> साधारण व्यवहारमातृका प्रकरण | <u>13-</u> क्रीतानुशय |
| <u>2-</u> असाधारण | <u>14-</u> अश्रुपेत्याशुश्रूषा |
| <u>3-</u> ऋणादान | <u>15-</u> संविद्वयतिक्रम प्रकरणम् |
| <u>4-</u> उपनिधि | <u>16-</u> वैतनादान |
| <u>5-</u> साहि | <u>17-</u> दूतसमाहृत्य |
| <u>6-</u> लैव्य | <u>18-</u> वाक्पात्रव्य |
| <u>7-</u> दिव्य | <u>19-</u> दण्डपात्रव्य |
| <u>8-</u> दायविभाग | <u>20-</u> साहस्यप्रकरणम् |
| <u>9-</u> सीमाविवाद | <u>21-</u> विक्रीयसंप्रदान |
| <u>10-</u> स्वामिपाल विवाद | <u>22-</u> संभूयस्मृत्यान् |
| <u>11-</u> स्वामिविक्रयप्रकरण | <u>23-</u> स्तेयप्रकरणम् |
| <u>12-</u> दत्ताप्रदानिक | <u>24-</u> स्त्रीसंबन्धप्रकरणम् |
| | <u>25-</u> प्रकीर्ण |

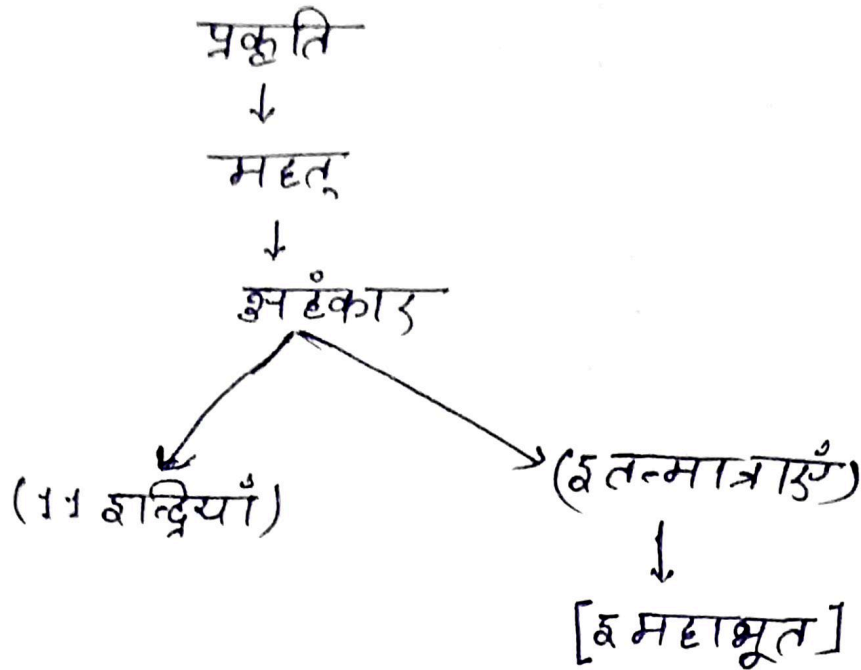
याज्ञवल्क्य स्मृति की टीकाएँ →

1. विश्वउग्र → बालक्रीडा नाम्नी टीका
2. विज्ञानेश्वर → मिताक्षरा
3. शूलपाणि → दीपकलिका
4. अपतार्क → अपरादित्य / अपतार्कभाष्य / याज्ञवल्क्य
- धर्मशास्त्रानिवं
5. नन्दपण्डित → प्रमिताक्षरा
6. बालभट्ट → बालभट्टी टीका
7. विश्वेश्वर → सुवीथिनी



[सौंख्यकारिका]

→ सृष्टि-प्रक्रिया



→ प्रत्ययसर्ग (बुद्धि सर्ग) → 4

- (1.) विपर्यय (5)
- (2.) अक्षान्ति (३०)
- (3.) तुष्टि (१९)
- (4.) सिद्धि (८)

इस प्रकार - प्रत्ययसर्ग के कुल भेद → ५०

1→ विपर्यय → ५ भेद

- (1.) तम - (८)
- (२.) मोह - (८)
- (३.) महामोह - (१०)
- (४.) तामिस्र - (१८)
- (५.) अन्धतामिस्र - (१८)

Total विपर्यय → ६२

तुष्टि → [9]

आध्यात्मिक तुष्टि → 4

1. प्रकृति
2. उपादान
3. काल
4. भाग्य

बाह्य तुष्टि → 5

1. शब्द
2. स्पर्श
3. रूप
4. रस
5. गन्ध

सिद्धि → 8

1. ऊर्ध्व
2. शब्द
3. अध्ययन,
क्षीन प्रपञ्च के दुःखों का विघात,
4. सुखप्राप्ति
5. दान

कण → 13

[बुद्धि, महंकार, 11 इन्द्रिय]

अन्तःकण → 3 [मन, बुद्धि, महंकार]

बाह्य कण → 10 [पञ्चज्ञानेन्द्रिय, पञ्च कर्मेन्द्रिय]

भौतिक - सर्ग → ३

[देव, तैर्यग्यीन, मानुष]

देवसृष्टि → ४ [ब्राह्म, प्राजापत्य, सौम्य, इन्द्र, गान्धर्व,
यक्ष, राक्षस, वैशाख]

तैर्यग्यीनसृष्टि → ५ [यक्षु (पानित), मृग (वन्य), पक्षी,
सर्प, स्थावर]

मानुष → १

वेदान्तसाङ्ग

रचयिता → सदानन्द

अनुबन्ध - चतुष्टय →

1. अभिकाशी
2. विषय
3. सम्बन्ध
4. प्रयोजन

कर्म → 6 प्रकार

1. काम्य कर्म → काम्यानि स्वर्गादीष्टसाधनानि ज्योतिष्टीमादीनि
2. निषिद्ध कर्म → निषिद्धानि तसकाद्यनिष्टसाधनानि ब्राह्मणहत्यादीनि
3. नित्य कर्म → नित्यान्यकृणै प्रत्यवायसाधनानि सन्ध्यावन्दनादीनि
4. वैमिलिक → पुत्रजन्माद्यनुबन्धीनि जातिष्टयादीनि
5. प्रायश्चित्त → पापक्षयसाधनानि ध्वस्तप्रायणादीनि
6. उपासना → स्वगुण ब्रह्मविषयभातसव्यापाङ्गुपाणि -
-शाठिडल्यविद्यादीनि।

साधनचतुष्टय →

1. नित्यानित्यबस्तुविवेक
2. इहामुत्रार्थफलभोगविभाग
- 3 - क्षमदमादिषट्सम्पत्ति
4. मुमुक्षुत्व

क्षमदमादिषट्सम्पत्ति →

1. क्षम
2. दम
3. उपरति
4. तितिक्षा
5. समाधान
- 6 - श्रद्धा

अज्ञान के दो भेद → 1. समाधि

2. व्यधि

अज्ञान की शक्ति → 1. समरुणा

2. विक्षेप

सूक्ष्मशरीर → [17 अवयव]

पंचबाह्येन्द्रिय (1. श्रोत्र, 2. त्वक्, 3. चक्षु, 4. शिखा,
5. घ्राण),

बुद्धि, मन,

पंचकर्मेन्द्रिय (1. वाक्, 2. पाणि, 3. पाद, 4. पायु
5. उपस्थ),

पंचवायु (1. प्राण, 2. अपान, 3. व्यान,
4. उदान, 5. समान)

पञ्चकोश → 1. आनन्दमय कोश

2. विज्ञानमय

3. मनीमय

4. प्राणमय

5. अन्तमय

→ (विज्ञानमयकोश, मनीमय, प्राणमय) → सूक्ष्मशरीर

→ आनन्दमयकोश → काउणशरीर

→ अन्तमयकोश → स्थूलशरीर

अन्य पाँच वायु →

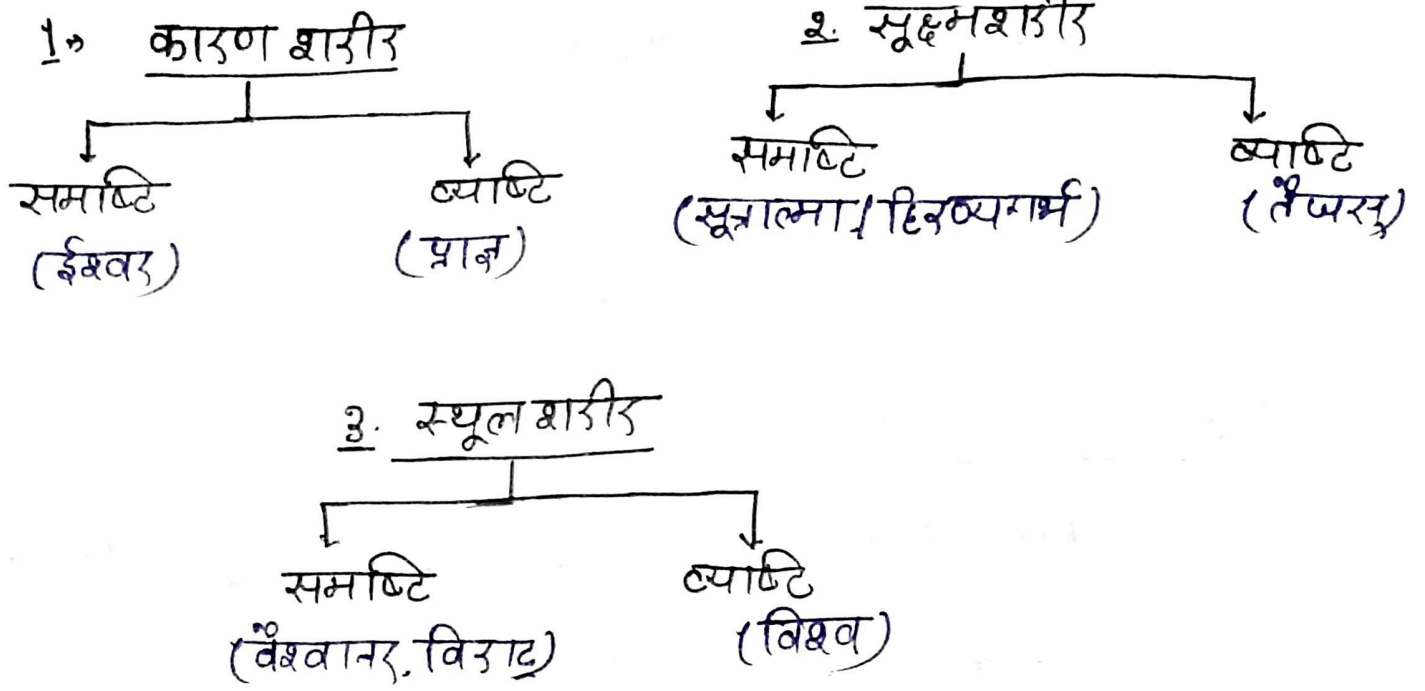
1. राग उद्दिग्वणकः।

2. कूर्म इन्मीलनकः।

3. कृकल मुत्कः।

4. देववतो जृम्भणकः।

5. शरभ्ययः पीषणकः।



पञ्चीकरण → 'द्विषा विषाय चैकैकं यदुर्धा प्रथमं पुनः।
स्वस्वेतु द्वितीयां शौर्यो जनात्पञ्चपञ्च ते ॥'

→ पञ्चीकृत (मह. भूतो) को ही स्थूलभूत कहते हैं।

[आकाश, वायु, अग्नि, जल, पृथ्वी]

त्रिवुल्लक्षण → [पृथ्वी, जल, अग्नि]

स्थूलशरीर →

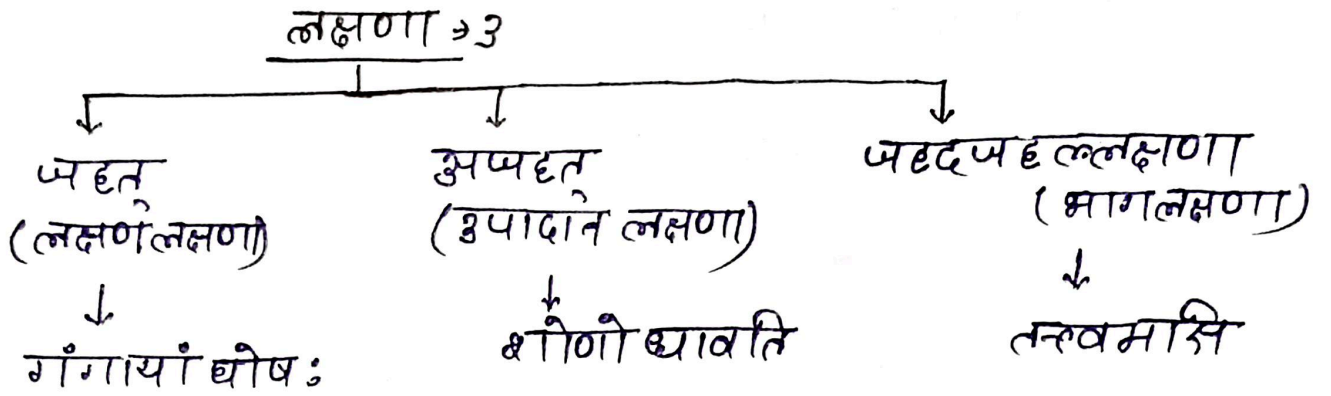
- अणुज - (मनुष्य, पशु आदि)
- अणुज (पक्षी, सर्प आदि)
- उद्भिज (तृण, वृक्ष आदि)
- स्वेदज (शुक्र, मरुत आदि)

विकार → 'सत्त्वतोऽन्यथा प्रया विकार इत्युदीरितः।'

विवर्त → 'अतत्त्वतोऽन्यथा प्रया विवर्त इत्युदाहृतः।'

महावाक्य →

- 1- प्रज्ञानं ब्रह्म → सैतरीयीपनिषद् → ऋग्वेद
- 2- तत्त्वमसि → छान्दोग्योपनिषद् → सामवेद
- 3- अहं ब्रह्मास्मि → बृहदारण्यकोपनिषद् → यजुर्वेद
- 4- अयमात्मा ब्रह्म → माण्डूक्योपनिषद् → अथर्ववेद



चार अनुष्ठान → 4

1. श्रवण 2. मनन
3. निदिध्यासन 4. समाधि

- षडलिङ्ग →
1. उपक्रम. उपसंहार
 2. अभ्यास 3. अपूर्वता
 4. फल 5. अर्थवाद
 6. उपपत्ति

समाधि → 2

1. सविकल्पक
2. निर्विकल्पक - 8

1. यम 2. नियम 3. आसन 4. प्राणायाम

5. प्रत्याहार 6. धारणा 7. ध्यान

8. समाधि

निर्विकल्पक समाधि के विधन → 4

1. लय
2. विक्षेप
3. कषाय
4. वसनासवाद

सत्ता → 3

1. प्रातिभासिक
2. व्यावहारिक
3. पारमार्थिक

❖ वेदान्तसार के अनुसार आत्मा

आत्मतत्त्वविचारे तु पुत्र इत्यतिप्राकृताः । शरीरमिन्द्रियं प्राणो मनश्चार्वाकवादिनः ॥

बुद्धिः शून्यश्च बौद्धास्तदज्ञानं गुरुतार्किकी । अज्ञानोपहितं चैतत् चैतन्यं भाट्टवादिनः ॥

वदन्ति नित्यशुद्धादि चैतन्यं शाङ्करास्तथा ।

दर्शन	श्रुति	आत्मा
अतिप्राकृत	आत्मा वै जायते पुत्रः	पुत्र
चार्वाक	स वा एष पुरुषोऽन्नरसमयः ते ह प्राणाः प्रजापतिं पितरमेत्योचुः अन्योऽन्तर आत्मा प्राणमयः अन्योऽन्तर आत्मा मनोमयः	स्थूलशरीर इन्द्रियाणि प्राण मन
बौद्ध	अन्योऽन्तर आत्मा विज्ञानमयः असदेवेदमग्र आसीत्	बुद्धि शून्य
प्रभाकर, तार्किक	अन्योऽन्तर आत्मानन्दमयः	अज्ञान
कुमारिलभट्ट	प्रज्ञानघन एवानन्दमयः	अज्ञानोपहितं चैतन्यम्
अद्वैतवेदान्त		नित्यशुद्धबुद्धमुक्तसत्यस्वभावं प्रत्यक्चैतन्य

[तर्कसंग्रह]

रचायिता → अनन्तं भट्ट

पदार्थ → ४

[द्रव्य, गुण, कर्म, सामान्य, विशीष,
समवाय, अभाव]

द्रव्य → ९

[पृथ्वी, जल, तेज, वायु, अकाश, काल,
दिक्, आत्मा, मन]

गुण → २४

[रूप, रस, गन्ध, स्पर्श, संज्ञा, पञ्चिण,
पृथक्त्व, संयोग, विभाग, यत्न, अपयत्न, गुरुत्व,
द्रवत्व, स्नेह, शब्द, बुद्धि, सुख, दुःख, इच्छा, द्वेष,
प्रयत्न, धर्म, अर्धधर्म, संस्कार]

कर्म → ६

[उत्क्षेपण, अपक्षेपण, आकुञ्चन,
प्रसारण, गमन]

सामान्य → २

[पद, अपद]

विशीष → [अनन्त]

समवाय → १ (मयुतासिद्धवन्ति)

अभाव → ४ [प्रागभावः, प्रवृत्ताभावः,
अत्यन्ताभावः, अत्यन्त्याभावः]

रूपम् → ७

[शुक्ल, नील, पीत, रक्त, हरित, कपिश, चित्र]

रसः → 6

[मुधुर, अम्ल, लवण, कटु, कषाय, तिक्त]

गन्धः → 2

[सुगन्धि, असुगन्धि]

स्पर्शः → 3

[शीत, उष्ण, अनुष्णाशीत]

पात्रिमाणम् → 4

[अणु, महत्, दीर्घ, दृश्य]

शब्दः → 2

[ध्वन्यात्मक, वणात्मक]

बुद्धिः → 2

[स्मृति, अनुभव]

↓
2 (यथार्थ, अयथार्थ)

↓
4 [प्रत्यक्ष, अनुमिति, उपमिति,
शब्द]

यथार्थानुभवकरणानि → 4 [प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान, शब्द]

कारण → 3 [समवायि, असमवायि, निमित्त]

सन्निकर्षः → 6 [संयोग, संयुक्तसमवाय,

संयुक्तसमवेतसमवाय, समवाय,

समवेतसमवाय, विशीघ्रविशेष्यभाव]

अनुमान → २

१. स्वायत्तमान
२. परार्थानुमान

पञ्चावयवाः → [प्रतीक्षा, हेतु, उदाहरण, उपनय, निगमन]

लिङ्गाभेदः - ३

[अन्वयव्यतिरेकि, केवलान्वयि,
केवलव्यतिरेकि]

हेत्वाभास → ५

१. सव्याभिचारः [साध्यातण, असाध्यातण,
अनुपसंहारी]

२. विरुद्धः

३. सत्प्रतिपक्षः

४. असिद्धः [आश्रय, स्वरूप, व्याप्यत्वासिद्धः]

५. बाधितः

संस्कार → ३

[वेग, भावना, स्थितिरुत्थापकः]

[तर्कभाषा] → केशव मिश्र

षोडशायदार्थ → 1. प्रमाण , 2. प्रमेय

3. संशय 4. प्रयोजन

5. दुष्टान्त

6. सिद्धान्त [(1) सर्वतन्त्र , 2) प्रतितन्त्र ,

3) अधिकरण , 4) अश्रुपगम्]

7. भवयव

8. तर्क

9. निर्णय , 10. वाद

11. व्युत्पत्ति , 12. वितण्डा

13. हेत्वाभास 14. कल

15. व्याप्ति

16. निग्रहस्थान

प्रमेय → 12

[1. आत्मा , 2. बाह्य , 3. इन्द्रिय

4. अर्थ , 5. बुद्धि , 6. मन

7. प्रवृत्ति , 8. दीप 9. प्रेत्यभाव

10. फल

11. दुःख

12. अपवर्ग

❖ बुद्धचरितमहाकाव्य के सर्गों के नाम ।

बुद्धजन्मविहारश्च संवेगः स्त्रीनिवारणम् । निष्क्रमश्छन्दकं तप्तं प्रवेशश्च विलापनम् ।

कुमारान्वेषणं बिम्बं कामनिन्दा च दर्शनम् । कामविजयबुद्धत्वप्राप्तिः सर्गश्चतुर्दश ॥

- बुद्धचरित महाकाव्य में अट्ठाईस (२८) सर्ग थे । किन्तु वर्तमान में चौदह सर्ग ही संस्कृत में प्राप्त होते हैं । तिब्बती और चीनी भाषाओं में किये गये इस ग्रन्थ के अनुवाद में २८ सर्ग दिखाई देते हैं । संस्कृत में प्राप्त होने वाले सर्गों के नाम हैं -

१. बुद्धजन्म	८. अन्तःपुरविलाप
२. अन्तःपुरविहार	९. कुमारान्वेषण
३. संवेगोत्पत्ति	१०. बिम्बिसारागमन
४. स्त्रीनिवारण	११. कामनिन्दा
५. अभिनिष्क्रमण	१२. अरादर्शन
६. छन्दकविसर्जन	१३. कामविजय
७. तपोवनप्रवेश	१४. बुद्धत्वप्राप्ति

अभिज्ञानशाकुन्तलम् → नाटक अङ्कों के नाम

श्लोक सं.

- 1 → आश्रम प्रवेश → 34
- 2 → आश्रम निवेश → 18
3. मिलन → 24
4. विदा → 22
5. प्रत्यागमन → 31
6. पश्चात्ताप → 32
7. पुनर्मिलन → 35

उत्तररामचरितम्

- 1 → चित्रदर्शन → 51
- 2 → पञ्चवटी-प्रवेश → 30
- 3 → द्वाया → 40
- 4 → कौशल्याजनकयोग → 29
- 5 → कुमादविक्रम → 35
- 6 → कुमाद प्रत्यभिज्ञान → 42
- 7 → सम्मेलन → 21

मुद्राराक्षस के अंको के नाम

मुद्राप्राप्तिर्विक्रयश्च कलहोऽथ प्रलोभनम् ।
कूटलेखश्च पाशश्च सङ्ग्रहं राक्षसे क्रमात् ॥

१. मुद्राप्राप्ति

२. भूषणविक्रय

३. कृतककलह

४. प्रलोभन

५. कूटलेख

६. कपटपाश

७. सङ्ग्रहण

मृच्छकटिक के अंको के नाम ।

अलं द्यूतञ्च सन्धिञ्च मदनी दुर्दिनस्तथा ।

विपर्ययापहरणे मोटनो व्यवसंहृतिः ॥

१. अलङ्कारन्यास	६. प्रवहणविपर्यय
२. द्यूतकरसंवाहक	७. आर्यकापहरण
३. सन्धिच्छेद	८. वसन्तसेनामोटन
४. मदनिकाशर्विलक	९. व्यवहार
५. दुर्दिन	१०. संहार

अंकों की संज्ञा-

अंक	संज्ञा
प्रथम अंक	मदनमहोत्सव
द्वितीय अंक	कदलीगृह
तृतीय अंक	संकेतक
चतुर्थ अंक	ऐन्द्रजालिक

काव्यप्रकाश →

प्रथम उल्लास	→	काव्य-प्रयोजन - कारण-स्वरूपनिर्णय
द्वितीय - उल्लास	→	शब्दार्थ-स्वरूप निर्णय
तृतीय - उल्लास	→	अर्थव्यञ्जकता - निर्णय
चतुर्थ	→	ध्वनि-निर्णय
पञ्चम	→	ध्वनिगुणीभूतव्यंग्यसंकीर्णभेदनिर्णय
षष्ठ	→	शब्दार्थ-चित्र निरूपण
सप्तम	→	दोष दर्शन
अष्टम	→	गुणालंकार भेद निर्णय
नवम	→	शब्दालंकार
दशम	→	अर्थालंकार

पञ्चकाव्य (विश्वकाव्य) -

विश्वमे नाम कुमौर पद्यदीप्तौ द्वौ. षट् काव्य

चम्पू-काव्य कहलाता है।

गद्यपद्य (चम्पू) राजसूति का नाम - विरुद्ध है। विविध भाषाओं से निर्मित कर्मका कहलाता है। काव्यों के अन्य सब वीद वसी के अंतर्गत अर्थात् है।

साहित्य-दर्पण परिच्छेदों के नाम -

१. प्रथम-परिच्छेद -> विमलार्थदर्शिन्या। (अत्यरवरूप निरूपणम्)
२. द्वितीय-परिच्छेद -> वाक्यरवरूपानिरूपणी नाम।
३. तृतीय-परिच्छेद -> रसादिनिरूपणी नाम।
४. चतुर्थ-परिच्छेद -> द्वयनिगुणीभूतव्यंग्यारूपकाव्यधेद निरूपणी नाम।
५. पञ्चम-परिच्छेद -> व्यकल्पन। व्यापार निरूपणी नाम।
६. षष्ठ-परिच्छेद -> दृश्यश्रव्यकाव्यनिरूपणी नाम।
७. सप्तम-परिच्छेद -> दोष निरूपणी नाम।
८. अष्टम-परिच्छेद -> गुणविवेचनी नाम।
९. नवम-परिच्छेद -> रूपाणि विवेचनी नाम।
१०. दशम-परिच्छेद -> अलंकारिक नाम।

दार्शनिक ग्रन्थ → मङ्गलाचरण

तर्कसंग्रह →

1. निद्याय हृदि विश्वेशं विद्याय गुरुवन्दनम् ।
बालानां सुरवबोधाय क्रियते तर्कसंग्रहः ॥

[छन्द → अनुष्टुप्]

[मङ्गलाचरण → नमस्कारात्मक, वस्तुनिर्देशात्मक]

2. सांख्यकारिका →

दुःखत्रयाभिधाता जित्वा सा तदपघातके हेतौ ।

दृष्टे सापार्था येत् नैकाग्र्याल्यन्तोऽभावात् ॥

[छन्द → शार्ङ्ग]

[मङ्गलाचरण → वस्तुनिर्देशात्मक]

3. तर्कभाषा →

बालोऽपि यो न्यायतये प्रवेशम् अल्पेन बालकल्यणः
संक्षिप्तशुक्लान्विततर्कभाषा, प्रकाशयते तस्य श्रुतेन ।
कृते मर्येणा ॥

[छन्द → उपजाति]

[मङ्गलाचरण → वस्तुनिर्देशात्मक]

4. वेदान्तसार →

अउवठं सारिचिदानन्दमवाऽन्मनसगोचरम् ।
आत्मानमखिलाधारमाश्रयेऽभीष्टसिद्धये ॥

[छन्द → अनुष्टुप्]

[मङ्गलाचरण → आशीर्वादात्मक]

5. अर्थसंग्रह →

वासुदेवं रमाकान्तं नत्वा लोणाहिभारुकरः ।

कुरुते ज्यैमिनिनयै प्रवेशायार्थसंग्रहम् ॥

[छन्द → अनुष्टुप्]

[मङ्गलाचरण → नमस्कारात्मक]

6. गीता →

धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे समवेता युयुत्सवः ।

मामकाः पाण्डवाश्चैव किमकुर्वत सञ्जय ॥

[छन्द → अनुष्टुप्]

[मङ्गलाचरण → वस्तुनिर्देशात्मक]

[7] कादम्बरी कथा →

रज्जोबुधे जन्मनि सत्तवृत्तये स्थितौ प्रज्जानां प्रलये तमःस्पृशे ।
अप्पाचरन्गस्थितिनाशद्वैतये त्रयीमृयाय त्रिगुणात्मने नमः ॥

↓ नमस्कृतात्मक

छन्दः अर्वाङ्गस्थ

[8]

1. श्रीमद्भगवद्गीता → महाभारत (भीष्मपर्व, अध्याय → 25-42)
2. दृडिवंशपुटाण → महाभारत का सिलपर्व / दृडिवंशपर्व
3. रासपञ्चाध्यायी → भागवतमहापुटाण (दशमस्कन्ध)
4. दुर्गासप्तशती → मार्कण्डेयपुटाण (अध्याय 81-93)
5. हंसगीता → विष्णुधर्मोत्तरेपुटाण (तृतीय खण्ड - अ. 227-342)
6. अध्यात्म रामायण → ब्रह्माण्डपुटाण (उत्तरखण्ड का एक भाग)
7. पराशर-गीता → महाभारत (शान्तिपर्व - अ. 290-98)
8. विष्णुसहस्रनामस्तोत्र → महाभारत (अनुशासनपर्व, अ. 149)
9. शिवसहस्रनामस्तोत्र → महाभारत (अनुशासनपर्व, अ. 17)
10. हंसगीता → महाभारत (शान्तिपर्व - अ. 299)
11. शकुन्तलोपाख्यान → महाभारत (आदिपर्व, अ. 68-74)
12. नलोपाख्यान → महाभारत (बलपर्व, अ. 53-79)
13. समोपाख्यान → महाभारत (वनपर्व, अ. 274-91)
14. सावित्र्युपाख्यान → महाभारत (वनपर्व, अ. 292-99)

संस्कृत ग्रंथी का मंगलाचरण

[1] विष्णुपालवधम्

प्रियः पतिः प्रीयति शासितुं जग-
ज्जगान्निवासो वसुदेवसद्वसनि
वसन्ददशावितरन्तमम्बराद्
हिरण्यगर्भाङ्गुलं मुनिं हडिः ॥

→ वस्तुनिर्देशात्मक
छन्द → वंशादय

[2] मुचुकटिकम्

पर्यङ्गव्यवस्थद्विगुणितभुजगश्लेषसंवीतध्वनौ
रन्तः प्राणावरोधस्युपउत्तरसकलज्वलरुद्धे द्रियस्य।
आत्मव्यात्मानमेव व्यपगतकळौ पश्यतस्तत्त्वद्वया
शम्भोर्वः पातु शून्यैर्गणधटितलयवृक्षलग्नः समाधिः ॥

→ आशीर्वादात्मक
छन्द → स्रग्धरा

[3] नैषधीयचरितम्

निपीय यस्य हितिरिषिणः कथां
तथाऽऽद्रियन्ते न उद्याः सुधामपि।
नलः सितच्छत्रितकीर्तिमण्डलः
स राशीरासीन्महतां महोत्पलवः ॥

→ वस्तुनिर्देशात्मक
छन्द → वंशादय

[4] नलचम्पू

जगति तगिद्विभूतायाः कामसन्तापवादि
न्युरसि रसनिषेकश्चानन्दश्चान्दमौलिः।
तदनु च विजयन्ते कीर्तिभ्राजं कवीम्
ससकृदमृतविन्दुरस्यन्दिनी वाग्विलासाः ॥

→ ममकादात्मक-
वस्तुनिर्देशात्मक
छन्द → मालिनी

[5] रघुवंश

बागथाविव संपृक्तौ वागर्थप्रतिपत्तये।
जगतः पितरौ बन्दे पार्वतीपदमैश्वरी ॥

→ ममकादात्मक
छन्द → अजुष्ट

[6] अभिज्ञानशाकुन्तलम्

यासृष्टिः स्रष्टुराद्या वदति विधिदुतं चा हविर्या च हौत्री,
ये द्वे कालं विधुतः, युतिविषयगुणा या विधिता व्याप्य विश्वम्।
यामादुः सर्ववीजप्रकृतिरिति यया प्राणिनः प्राणवन्तः
प्रत्यक्षाभिः प्रपन्नस्तनुभिः वस्तु वस्ताभिरव्वाभिरीक्षः ॥

→ आशीर्वादात्मक
छन्द → स्रग्धरा

काव्यशास्त्रीय ग्रंथों का मंगलचरणा →

[1] काव्यप्रकाश →

नियतिकृतनियमरहितं ह्यर्देकमयीमनन्य परतन्त्राम् ।
नवरसश्रुचिरां निर्मितिमादधती भारती कवैर्जयति ॥

[2] साहित्यदर्पण →

शरादिदुस्सुन्दरश्रुचिरैतसि सा मे गिरां देवी ।
अपहृत्य तमः सन्ततमर्थानि दिवसान् प्रकाशयतु ॥

[3] ध्वन्यालोक →

स्वैच्छाकैसरिणः स्वच्छस्वच्छाया धारितेन्दवः ।
त्रायन्तां वो मधुरिणीः प्रपन्नार्तिच्छिदो नरवाः ॥

[4] दशरूपक →

1- नमस्तस्मै गणेशाय अत्कण्ठः पुष्कलायते ।
मदाभोगाद्यनध्वानी नीलकण्ठस्य ताण्डवे ॥

[5] 2. दशरूपानुकारेण यस्य माद्यन्ति भावकाः ।
तमः सर्वविदै तस्मै विष्णवे भजताय च ॥

[5] नाट्यशास्त्र →

प्रणम्य शिरसा देवीं पितामहमेश्वरीं ।
नाट्यशास्त्रं प्रवक्ष्यामि ब्रह्मणा यदुदाहृतम् ॥

[6] वक्रोक्तिचिन्तावितम् →

कारिका →

वन्दे कवीन्द्रवक्त्रेन्दुलस्य महिदरनर्तकीम् ।
देवीं सुप्तिपदिरुपन्दसुन्दराभिरयोऽप्यलाम् ॥

धृति →

अगत्त्रितयै चित्रं चित्रकर्मविद्यायितम् ।
शिवं शक्तिपरिरुपन्दमात्रोपकण्ठं मुमः ॥

संस्कृत नाटकों में विदूषक →

नाटक

विदूषक

1. हयमित्रानशोकान्तलम् (कालिदास) → माधव्य / मादव्य
2. विक्रमोर्वशीयम् (कालिदास) → माणवक
3. मालविकाग्निमित्रम् (कालिदास) → गोतम
4. मृच्छकटिकम् (शूद्रक) → मैत्रेय
5. रत्नावली (श्रीहर्ष) → वसन्तक
6. स्वप्नवासवदत्तम् (मास) → वसन्तक
7. उत्तररामचरितम् (भवभूति) →
8. मालतीमाधवम् (") →
9. महावीरचरितम् (") →
10. मुद्राराक्षसम् (विशाखदत्त) → विदूषक का अभाव
11. वेणीसंहारम् (कामधरायण) → अभाव

विदूषक का अभाव

विदूषक का अभाव

संस्कृत भाषा में कव्युक्ति →

कव्युक्ति लक्षणः

माध्यम ॥ ५ ॥

अन्तःपुञ्जरी हृद्दी विप्रो गूणगणान्वितः ।
सर्वकार्यकुशलः कव्युक्ति उत्प्रेक्षणीयते ॥

मार्क

- १. प्रतिभाजीगन्धरायण
- २. वृत्तवाक्यम्
- ३. स्वप्नवसुवदन्तम्

→

कव्युक्ति का नाम

वाक्यायण

४. अन्तःपुञ्जरी हृद्दी विप्रो गूणगणान्वितम् → वातायन

५. अन्तःपुञ्जरी हृद्दी विप्रो गूणगणान्वितम् → गृष्टि

६. अन्तःपुञ्जरी हृद्दी विप्रो गूणगणान्वितम् → ब्राम्हण

७. अन्तःपुञ्जरी हृद्दी विप्रो गूणगणान्वितम् → अयन्धर (पुष्पिन्धर का)
विनयन्धर (दुर्योधन का)